

चलो उट्टो, ज़रा-सा हाथ दो  
बादल हटाते हैं  
वो उस तरफा जो दस तारे हैं  
उनको पास लाते हैं

खड़े कर रास्ते लम्बे  
पहाड़ों पे टिकाते हैं  
सुना है लोग असमानों पे  
कुछ मुश्किल से जाते हैं

तुम्हें भी तो ये आते होंगे,  
हमको रोज़ आते हैं  
सुबह उठते हैं इनको  
सोचते हैं, मुस्कुराते हैं

- सुशील शुक्ल